ओमशांति। मीठे–2 बच्चे, जिन्हों को गोप–गोपियाँ भी कहा जाता है। सतयुग में गोप–गोपियाँ नहीं होते, वहाँ तो राजधानी चलती है। गोप–गोपियों का वर्णन संगमयुग पर है, जबकि गोपीवल्लभ भी आते हैं। वल्लभ बाप को कहा जाता है। बच्चे याद करते हैं– बाबा, फिर से आओ। सभी सेन्टर्स के बच्चे बैठे होंगे, सबको पता है कि बाबा इस समय मुरली बजाता होगा, वह मुरली टेप में भरती होगी, लिखते होगी, लिथो होगी, फिर हमारे पास आवेगी। हम धारणा करेंगे, फिर धारण करावेंगे। वह सब समझते होंगे कि मधुबन में तो गोप–गोपियाँ, गोपीवल्लभ से सन्मुख सुनते होंगे, वही मुरली हम चार/पाँच दिन बाद सुनेंगे। ऐसे खयालात चलेंगे न! कहते हैं– बाबा, आप आओ तो हम सदैव मुस्कुराने लग जावें; जैसे देवताएँ सदैव हर्षित रहते हैं। वहाँ यथा राजा–रानी तथा प्रजा सब हर्षित रहते हैं, दुःख का नाम–निशान नहीं रहता। यहाँ तो है ही प्रजा का राज्य। तुम बच्चे जानते हो, बाबा आकर हमको पढ़ाते हैं। यहाँ गरीब ही पढ़ सकते हैं। जैसे वह गरीब लोग भी कोई ए.एम.एल.ए. को ए.एम.पी. बन जाते हैं न! यहाँ गरीब ही अच्छी रीति पढ़ेंगे। वारिस भी ऐसे साधारण गरीब ही बनते हैं। साहुकारों को नखरा बहुत रहता– एक तो धन का नशा, दूसरा फिर नखरा फुर्सत नहीं। बलि भी नहीं चढ़ सकते। यहाँ बलि चढ़ना होता है तन–मन–धन सहित। साहुकारों का हृदय विदीर्ण होता है, फुरना बहुत रहता है, इसलिए गरीब जैसे बलि चढ़ते हैं। इसमें भी पहले नम्बर में कन्याएँ जाती हैं। मम्मा भी कन्या है न! बाप के बने और कहेंगे– बस, मेरा तो शिवबाबा, दूसरा न कोई। इसको बलि चढ़ना कहा जाता है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए जैसे कि वहाँ नहीं हैं, बुद्धि में शांतिधाम, सुखधाम ही बसते हैं। अभी हम जाते हैं स्वीटहोम, फिर स्वीट राजाई। गृहस्थ व्यवहार में रहते, रचना की भी पालना करनी है; परन्तु श्रीमत से। श्रीमत तभी मिले जब बलि चढ़े। सर्वशक्तिवान के साथ योग लगाने से ही शक्ति मिलती है। बाप का न बनते हैं तो शक्ति मिलेगी नहीं। सगे और लगे होते हैं न! उन सन्यासियों में भी सगे और लगे होते हैं। कोई तो घर–बार छोड़ जाय कफनी पहनते हैं। वह ठहरे संगे। कोई फिर फॉलोअर्स होते हैं। वह रहते हैं गृहस्थ में ...। इनको कहेंगे सौतेले, सगे नहीं कहेंगे। वह है सिर्फ कहने वाले, वर्सा मिल न सके; क्योंकि अपवित्र रहते हैं। यहाँ भी कोई तो सगे हैं, जो पवित्रता की राखी बाँधते हैं। बाकी जो पवित्र न रहते, उनको पवित्र कह न सके। यह है राजयोग का सन्यास। वह है ही योग का सन्यास। बाबा ने समझाया है, कैसे अपन को सन्यासियों के फॉलोअर्स कहलाते हैं; परन्तु रहते हैं घर–गृहस्थ में, तो उनको वास्तव में फॉलोअर्स व सन्यासी कह न सके। सन्यास करने का पुरुषार्थ करने चाहते हैं; परन्तु बँधन है। जिन्होंने कल्प पहले सन्यास किया है वही छोड़ते हैं। वह हो जाते सगे और वह लगे। यहाँ भी जो बाप के बनते हैं वह सगे ठहरे। मदद और वर्सा भी सगे को मिलेंगे, लगे को मदद मिल न सके। बाबा ने समझाया है, यह है ज्ञान इन्द्रसभा। यहाँ सब ज्ञान पुखराजपरी है। नौ रत्नों की बहुत महिमा है। नौ रत्न की अंगूठी भी पहनते हैं। ब्राह्मण लोग कहते हैं, यह पहनो तो तुम्हारी दशा बदलेगी। पत्थरों में भी महिमा कर दी है। वहाँ तो तुम बच्चे, जितने जो सर्विसएबुल बच्चे हैं वह विजयमाला में आते हैं। ऊँच ते ऊँच हैं हीरा बनाने वाला बाबा, उनको बीच में रखते हैं। मनुष्य तो इन बातों को जानते नहीं– नौ रत्न कौन थे, पत्थर से मुशबत क्यों कराई है; जैसे नदियों से भी मुशबत कराई है न! तुम हो ज्ञान नदियाँ, वह हैं पानी की। तो कहते हैं– बाबा, आओ, हम सदैव हर्षित रहेंगे। आपकी मुरली सुनकर, औ(रों) को सुनावेंगे। फिर वहाँ प्रिन्स–प्रिन्सेज़ बन रत्न जड़ित मुरली भी चलाते हैं। मुरली बजाने का शौक रहता है। कृष्ण को भी मुरली थी ज़रूर, जबकि वह प्रिन्स था, रास करता था। बाकी ज्ञान मुरली बजाना तो ज्ञान सागर का ही काम है। वह बाप आकर ज्ञान मुरली चलाते हैं। ज्ञान की बात यहाँ ही है। वहाँ ज्ञान की बात नहीं होती। अब मुरली बजाने वाली तुम बच्चियाँ

हो। सतयुग में त्रिकालदर्शी पने का ज्ञान होता नहीं। वहाँ यह नॉलेज प्रायःलोप हो जाती है, परम्परा नहीं चल सकती। पीछे तो होती है प्रालब्ध। ज्ञान एक ही बार मिलता है। अभी तुम 21 जन्मों लिए प्रालब्ध ले रही हो। प्रालब्ध मिलेगी, फिर तो बाबा भी जाकर परमधाम में बैठ जाते हैं। तुमको ज्ञान–योगबल से विश्व का मालिक बनाय, हम वाणी से परे हो बैठ जाते हैं। फिर वहाँ मेरे को कोई नहीं जानते। मुझ रचता और मेरी रचना को कोई जान नहीं सकते। न बाप को जानते हैं, न सृष्टि के आदि–मध्य–अंत को जानते हैं। वहाँ यह ज्ञान नहीं रहता। र०कृ० को वहाँ यह पता हो कि 14 कला बनना है तो राजभाग की खुशी ही गुम हो जाए। यह ज्ञान वहाँ रहता नहीं। बाप हर बात क्लीयर समझाते हैं। तुम भी सन्यासी हो, वह भी सन्यासी हैं। वह है हठयोग का सन्यास। हद का घर–बार छोड़ जाते हैं। वह है शंकराचार्य, यह है शिवाचार्य। शिवबाबा ज्ञान का सागर है न। उनको आचार्य कहा जाता है, कृष्ण आचार्य नहीं। भगवान शिव आचार्य बैठ तुम बच्चों को ज्ञान सुनाते हैं, राजयोग सिखाते हैं। वह है हठयोगी, राजयोग सिखाय न सके। राजयोग फिर से सिखलाए न सके। यह बेहद का बाप ही सतयुग राज प्रदा(न) कराने, राजयोग सिखाते हैं। तुम अब बाप के पास आई हो। वह जन्म बाई जन्म सन्यास लेते हैं, तुम 21 जन्म फिर सन्यास नहीं लेती हो। तुम जानती हो, यह पुरानी दुनिया है, हम इसको ठोकर मारते हैं। तो बाबा ने दो प्रकार की यात्रा समझाई। यह रूहानी यात्रा, दूसरी जिस्मानी। सुप्रीम बाप कहते हैं, मैं तुमको यात्रा पर ले जाता हूँ, फिर तुम मृत्युलोक में नहीं आवेगी। बाप है सुप्रीम पण्डा, उनके बच्चे भी पण्डे ठहरे। वो जिस्मानी पण्डे, तुम हो रूहानी पण्डे रूहानी यात्रा कराने वाली। यह धारणा करने की बातें हैं। कोई बच्चे अच्छी रीति धारण कर समझाते हैं, कोई फिर ऐसे भी हैं जिनका योग फिर पूरा नहीं रहता है। भल ज्ञान की धारणा अच्छी होती है, योग नहीं ठहरता। ज्ञान में माया इंटरफियर नहीं करती, योग में माया इंटरफियर करती है। जैसे रेडिओ में स्पीच करते हैं, तो लड़ाई जब लगती है तो रेडिओ का आवाज़ एक/दो को सुनने न देते हैं, खट–2 करते हैं। तो योग में भी माया इंटरफियर करती है। भारत में योग का नाम मशहूर है। प्राचीन योग किसने सिखाया? उन्होंने तो कृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है। कृष्ण तो है सतयुग में। फिर कृष्ण का नाम–रूप, देश–काल बदलते–2 यह है अब अन्तिम जन्म। फिर इसमें बाप प्रवेश कर इनको वह बना रहे हैं। तुम जानते हो, ब्रह्मा सो देवता बने, फिर क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र बने। बाप बैठ समझाते हैं, मैं जो भी तुमको नॉलेज देता हूँ यह फिर प्रायःलोप हो जाती है। इस द्वारा सुनाता हूँ, तो पहला नम्बर नदी भी है। ब्रह्मा है बड़ी नदी। मेला लगता है न ब्रह्मपुत्रा और सागर पर। यह ब्रह्मपुत्रा है बड़ी नदी, जो धारणा कर कराती है। बरोबर भगवान रूप बदल आया है। जो निराकार रूप है वह बदल कर साकार में आते हैं, गर्भ में तो नहीं आते हैं। ब्रह्मा मुख द्वारा ही ब्राह्मण कुल पैदा होता है। नम्बरवन है यह ब्राह्मण कुल, पीछे फिर और कुल आते हैं। ब्राह्मणों का सबसे ऊँच कुल है। बाप ब्रह्मा मुख कमल द्वारा ब्राह्मणों को ज्ञान दे, दैवी धर्म और क्षत्रिय धर्म, दोनों की स्थापना करते हैं। सतयुग–त्रेता में और कोई धर्म होता नहीं। अब स्थापना हो रही है। रामचंद्र को क्षत्रियपन की निशानी दी है। बरोबर युद्ध के मैदान में था; परन्तु पूरी जीत न पाने कारण फेल हो गया; इसलिए सूर्यवंशी बन न सका। प्रश्न उठता है– राम–सीता सतयुग में आते हैं? हाँ, आते हैं; परन्तु नापास हुए हैं; इसलिए तो पास हुए जो ल०ना० हैं, उनके आगे भरी ढोते हैं। र०कृ० जो हैं, ल०ना० बनते हैं। र०सी० उनके आगे अच्छे से अच्छे दास बनते हैं; क्योंकि पूरा पढ़ा नहीं है। सतयुग में तो ज़रूर आते हैं। अविनाशी ज्ञान का नाश नहीं होता है। प्रजा तो बहुत बनती है न। कोई चले जाते हैं, फिर चक्कर लगाय आ जाते हैं। जावेंगे कहाँ! शमा एक ही है। परवाने अनेक हैं तो शमा पर आते रहेंगे। भागन्ति हो जाने वाले भी आवेंगे। सद्गुरु की निन्दा कराई है, फिर भी बाबा के पास आते हैं, तो समझाया जाता है, फिर भी तुम उठाय सकते हो। वह फील करते हैं, बरोबर हमारी ही भूल है, तो उनको भी शरण लेनी पड़ती है, फिर उनकी भी सेवा करेंगे। अंत तक फुल रहम करना है। कितना भी

विघ्न डाले हो, फिर भी कहेंगे– भल आओ, ट्रायल करो। मना नहीं है। बाप है ही फुल रहमदिल। तुम उनके बच्चे हो न! कहते हैं, माया ने फतकाया है। तो फिर भी उसकी सर्विस की जाती है। शरण आते हैं तो फिर उठाना है। अवगुण को निकाल गुणवान बनना चाहिए। बाप कब दुश्मन नहीं बन सकता। बेहद का बाप कहेगा, बच्चे सुखी रहें। रहम आता है, कहाँ जावेंगे! और तो कोई जगह नहीं जहाँ बाप से वर्सा ले सके। बाप सब बातें समझाते हैं। बहुत नहीं धारण कर सकते तो थोड़ा ही सही। अच्छा, मन्मनाभव, बाप की याद में रहो। आत्मा का स्वधर्म है शांति। अटेन्शन प्लीज़, सावधान, अपने बाप को याद करो। बाप को याद करने से वर्सा ज़रूर याद आवेगा। ऐसे हो नहीं सकता, वर्सा याद न आवे। बाप और वर्से को याद करने से तुम जीवनमुक्त बनते हो। कितनी सहज बात है। नाम ही रखा है– सहज याद। योग–2 कहने से मूँझते हैं। यह तो बाप को याद करना है। बाबा शरमाते हैं– अरे, बाप को भूल जाते हैं! योग की बात छोड़ो, बाप को कौन मूर्ख होगा जो भूल जावेगा! शर्म नहीं आता है, बाप को भूल जाते हो। अब बाप से हीरे जैसा जन्म मिला है तो उनको भूल जाते हो! लौकिक बाप को कब भूलते हो? बाप को भूला, वर्सा गुम। अपन को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करना है। आत्मा–अभिमानी बदले देह–अभिमानी बनने से धोखा खाती है। सन्यासियों का है निवृत्तिमार्ग। भारत पतित बनना शुरू हो जाता है तो यह आकर मरम्मत करते हैं, अपवित्र बनने से थमाते हैं। उनमें प्युरिटी की ताकत रहती है। प्युरिटी है तो पीस–प्रॉसपेरिटी है। कन्या भी पवित्र है तब तो उनको माथा टेकते हैं। देवताएँ पवित्र हैं तो सब उनके आगे माथा टेकते हैं। सतयुग में माथा टेकने की बात नहीं, सब पवित्र रहते हैं। अपने दर्पण में देखना चाहिए, हमारे में कोई भूल तो नहीं! हम लायक बने हैं ल०ना० को वरने? अपन को लायक बनाना चाहिए। तुम बच्चे जानते हो, ऊँच ते ऊँच है शिवबाबा। ब्र०वि०शं० अथवा ल०ना० आदि सब वर्थ नॉट ए पैनी हैं। एक शिवबाबा ही हीरे जैसा है, बाकी सब तमोप्रधान, कौड़ी समान है। महिमा सारी एक की है। सारी सृष्टि को स्वर्ग बनाना– यह बाप का ही काम है। बापदादा, मीठी–2 माँ का मीठे–2 बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ